शिव मंत्र | shiv mantra

शिव का बीज मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय।

तत्काल फल देने वाला शिव मंत्र

ऊं भूर्भुव: स्व ऊं हौं जूं स: ऊं।

यह शिव मंत्र भी शिव जी का बीज मंत्र है जो तत्काल फल देता है।

महामृत्युंजय मंत्र :-

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृ त्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

यह मंत्र भगवान शिव का बड़ा शक्तिशाली मंत्र हैं।संतान प्राप्ति के लिए भी यह मंत्र लाभदायकहै। इस मंत्र में इतनी शक्ति है कि यह शिव मंत्र मृत्यु शैया पर लेटे हुए व्यक्ति को भी यह जीवन प्रदान कर सकता है।

षडक्षर मंत्र

ॐ नमः शिवाय

यह षडक्षर मंत्र सभी दुखों का निवारण करने वाला मंत्र है। इस मंत्र द्वारा भोलेनाथ बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं। इस मंत्र का जाप करने से मन को शांति प्राप्त होती है।

पंचाक्षर मंत्र

नमः शिवाय

यह भगवान शिव का पंचाक्षर मंत्र है इस मंत्र द्वारा भगवान शंकर की कृपा बरसती है

वेदसार शिव स्तोत्रम् | Vedsar Shiv Stav lyrics

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम |

जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम।1।

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम्।

विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्।2।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।

भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्।3।

शिवाकान्त शंभो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिञ्जटाजूटधारिन् ।

त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप |4|

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम्।

यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् |5|

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा ।

न गृष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीड | 6 |

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।

तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम | 7 |

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।

नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम् ।8।

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शंभो महेश त्रिनेत्।

शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ।9।

शंभो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।

काशीपते करुणया जगदेतदेक-स्त्वंहंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ।10।

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।

त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मके हर चराचरविश्वरूपिन।11।

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितो वेदसारशिवस्तवः संपूर्णः ॥

श्री रुद्राष्टकम् | Shri Rudrashtakam

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् । निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् । करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम् । स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् । मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमाल प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् । त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी । चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी

न यावत् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् । न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् । जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भूः प्रसीदति ।

श्री शिव बिल्वाष्टकम | Shri Shiva Bilvashtakam

त्रिदतं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधं त्रिजन्म पापसंहारम् ऐकबिल्वं शिवार्पण

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अच्चिद्रैः कोमलैः शुभैः तवपूजां करिष्यामि ऐकबिल्वं शिवार्पण

कोटि कन्या महादान तिलपर्वत कोटयः काञ्चनं क्षीलदानेन ऐकबिल्वं शिवार्पण

काशीक्षेत्र निवासं च कालभैरव दर्शनं प्रयागे माधवं दृष्ट्वा ऐकबिल्वं शिवार्पणं

इन्दुवारे व्रतं स्थित्वा निराहारो महेश्वराः नक्तं हौष्यामि देवेश ऐकबिल्वं शिवार्पणं

रामलिङ्ग प्रतिष्ठा च वैवाहिक कृतं तधा तटाकानिच सन्धानम् ऐकबिल्वं शिवार्पणं

अखण्ड बिल्वपत्रं च आयुतं शिवपूजनं कृतं नाम सहस्रेण ऐकबिल्वं शिवार्पणं

उमया सहदेवेश नन्दि वाहनमेव च भस्मलेपन सर्वाङ्गम् ऐकबिल्वं शिवार्पणं

सालग्रामेषु विप्राणां तटाकं दशकूपयोः यज्ज्रकोटि सहस्रस्च ऐकबिल्वं शिवार्पणं

दन्ति कॊटि सहस्रेषु अश्वमेध शतक्रतौ कॊटिकन्या महादानम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

बिल्वाणां दर्शनं पुण्यं स्पर्शनं पापनाशनं अघोर पापसंहारम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

सहस्रवेद पाटेषु ब्रह्मस्तापन मुच्यते अनेकव्रत कॊटीनाम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

अन्नदान सहस्रेषु सहस्रप नयनं तधा अनेक जन्मपापानि ऎकबिल्वं शिवार्पणं

बिल्वस्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेश्शिव सन्निधौ शिवलोकमवाप्नोति ऎकबिल्वं शिवार्पणं

Jyotirlinga Stotram

श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम् । तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्

अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् । अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय । सदैवमान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् । सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः ।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः । सुरासुरैर्यक्ष महोरगाढ्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे

सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरितीरपवित्रदेशे । यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे

सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः । श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि

यं डाकिनिशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च । सदैव भीमादिपदप्रसिद्दं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् । वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये

इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् । वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणम् प्रपद्ये

ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण । | स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च

इति द्वादश ज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

Shiv gayatri mantra

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमही तन्नो रुद्र प्रचोदयात

सर्व शक्तिशाली शिव मंत्र

नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मे न काराय नमः शिवायः ॥ मंदारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मे म काराय नमः शिवायः ॥

यह मंत्र भगवान शिव का सर्व शक्तिशाली मंत्र हैं।इस मंत्र का जाप सिर्फ 108 बार करने से दैवीय शक्तियां मिलने लगती हैं।

भगवान शिव जल्दी प्रसन्न होने वाले देव हैं। यह इतने भोले हैं कि इनको कोई प्रेम और निस्वार्थ भाव से याद करें तो यह उस पर भी बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं ।

धनदायक शिव मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं नमः शिवाय।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

जय मंत्र भगवान शिव का धन प्राप्त करने के लिए हैं। इस मंत्र का उच्चारण भगवान शिव के मंदिर जाकर उनके शिवलिंग पर जल चढ़ाते समय कीजिए ।भोलेनाथ आपके पुकार बहुत जल्दी सुनेंगे।आर्थिक तंगी को खत्म कर देंगे।

प्यार पाने का शिव मंत्र

ॐ ह्रीं नमः

प्यार पाने के लिए सबसे पहले शिव पार्वती की पूजा करनी चाहिए । विधि-विधान के साथ भगवान भोलेनाथ का रुद्राभिषेक करना चाहिए। इस मंत्र का पूरी स्वच्छता और पवित्रता के साथ 40 दिन में रोज एक हजार बार **ॐ ह्रीं नमः** जप करना चाहिए। यह मंत्र प्यार पाने के लिए और प्यार की सुरक्षा के लिए हैं।

दरिद्रता नाशक शिव मंत्र

कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय ।

गंगाधराय गजराज-विमर्दनाय दारिद्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ।।

भगवान शिव का यह मंत्र दरिद्रता दूर करने के लिए है। भगवान शिव का ध्यान करके इस मंत्र का रोजाना उच्चारण कीजिए।

पुत्र प्राप्ति के लिए शिव मंत्र

ॐ नमः शिवाय

पुत्र प्राप्ति के लिए सोलह सोमवार के व्रत रखें। ॐ नमः शिवाय का जाप करते हुए भगवान शिव को पंचामृत से जैसे दूध,दही जल,चावल और बेलपत्र से भगवान का अभिषेक कराएं।

ऋण मुक्ति शिव मंत्र

ॐ ऋण मुक्ति शिव मुक्तेश्वर महादेवाय नमः

हर मंगलवार के दिन शिव मंदिर में जाकर एक हजार बार इस मंत्र का जप करने से जातक को कर्ज से मुक्ति मिलती है। जब तक ऋण या कर्ज से छुटकारा नहीं मिल जाता तब तक हर मंगलवार 1000 मंत्र का जप करते रहें।

रोग मिटाने के लिए शिव मंत्र

ॐ नमः नीलकण्ठाय नमः

इस मंत्र का उच्चारण रोगों या संकटों से मुक्ति पाने के लिए किया जाता है।

इस मंत्र का उच्चारण रोगों या संकटों से मुक्ति पाने के लिए किया जाता है